Monday

Vijay Kumar Jha
Deptt in History
V. S. J. College Rajnagar

Degree II Part

Arab invasion on India

आन्तरीक शक्ति कमजोर होने के बाहरी विदेशी आक्रमण के बादल मंडराने लगते है। ऐसी ही परिस्थिति भारत मे उत्पन्न हुई। शक्तिशाली गुप्तवंश के द्वारा स्थापित साम्राज्य मे राजनीतिक एकता हर्षवर्द्धन कि मृत्यु के बाद समाप्त हो गई सम्पूर्ण उत्तरी भारत कई छोटे राज्यों मे बट गये तथा आपसी वैमनस्य कि भावना व्याप्त हो गई। अत: वैदेशिक आक्रमण अवश्यम्भावी हो गया।

वैदेशिक आक्रमण के क्रम मे सर्व प्रथम अरबों के आक्रमण हुये। अरब सातवीं सदी से ही आक्रमण कि योजना बना रहा था क्योंकि अरब एक शक्तिशाली सैनिक शक्ति के रुप में उभरी थी जो विश्व इतिहास के प्रमुख घटना मानी जाती है हलांकि भारत पर पूर्व में भी आक्रमण किये थे किन्तु उन्हे विशेष सफलता नही मिली थी।

अरबों ने भारत पर प्रथम अभियान सुनियोजित ढंग से किया तथा भड़ौंच, देवल, थाने के बन्दरगाहो पर अधिकार करने का प्रयास किया पर उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली। अरबों का यह अभियान 636 ई० मे हुआ। पुन: 643 ई० मे अरबों ने सिंध पर अधिकार करने का प्रयास किया किन्तु उन्हें यहाँ भी असफलता ही हाथ आयी।

अरबों ने अपनी प्रथम प्रयास मे असफलता को देखकर पुन: द्वितीय अभियान कि योजना बनाई उस समय सिंधु का राजा दाहिर था और एक जहाज 708 ई मे महिलाओं को लेकर श्री लंका से ईराक जा रहा था उस जहाज को देवल के निकट कुछ लुटेरो ने लूट लिया

Scanned with Cam

इराक के गवर्नर ने दाहिर को इन लूटेरों को दंडित करने का सन्देश भेजा, किन्तु दाहिर ने ऐसा करने से मना कर दिया। अवसर की ताक में लगे अरब गवर्नर हज्जाज ने उबैदुल्लाह के नेतृत्व में सिंधु पर आक्रमण करने के लिये सेना भेज दिया, किन्तु अरबों के सैनिक ने पराजित हुए। पुनः अरब सेनापति बुदैल खां के नेतृत्व में पुनः सैनिक देवल पर आक्रमण कर दिया। किन्तु इस युद्ध में भी दाहिर के पुत्र के हाथों अरब पराजित हुआ।

अपने दो सेनापतियों कि पराजय के बाद हज्जाज अत्यन्त क्रोधित हुआ और अपने दामाद मुहम्मद-बिन-कासीम के नेतृत्व में पुनः सैनिक टुकड़ी भेजा। इस युद्ध में दाहिर के विरोधियों ने मुहम्मद कासीम कि मदद कि। मुहम्मद-बिन-कासीम ने पूर्ण दल-बल से देवल पर आक्रमण किया। इस युद्ध में मीर कासीम दाहिर पर विजय प्राप्त की और वह देवल पर अधिकार करने में सफल हो गया। अरबों ने देवल पर लूट-मार मचा दी। तत्पश्चात बिन कासीम ने निरुन नगर को अधिनता स्वीकार करने को विवश किया। दाहिर ने रावोर नामक स्थान पर बिन कासीम का अत्यन्त ~~विकट~~ वीरता से सामना किया किन्तु अचानक हृदय में तीर लग जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गई। तत्पश्चात दाहिर के पुत्र ने फिर भी अरबों से लड़ा लिया।
वे असफल रहे और इधर बिन कासीम ने अलोर तथा मुल्तान पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार सम्पूर्ण सिंधु पर अरबों का अधिकार हो गया। बिन-कासीम एक महान सेनापति था तथा उसकी महत्वपूर्ण विजयों के कारण मुसलमानों ने भारतीय भूमि पर सर्वप्रथम कदम जमाया। उपरोक्त उपयुक्त विजयों के बावजूद बिन कासीम को 715 ई० में मृत्यु दंड दे दिया गया।
अन्ततः बिन कासीम के मृत्यु के कारण उसके श्वसुर हज्जाज एवं खलीफा सुलेमान कि शत्रुता रही थी।

बिन कासीम के मृत्युपरान्त दाहिर के पुत्र ने पुनः अरबों द्वारा विजित प्रदेश ब्राह्मणाबाद पर अधिकार कर लिया तथा बे खलीफा द्वारा वहाँ के गवर्नर नियुक्त किया गया।
अरबों कि यह विजय स्थायी नहीं रह सकी पुनः उत्तर भारत के शक्तिशाली राजाओं ने अरबों को भारत के अन्दर प्रवेश पर रोक लगा दिया। नागभट्ट द्वितीय ने अरबों को पराजय किया था। इसके अतिरिक्त यशोवर्मा तथा गुर्जर प्रतिहार शासकों भी अरबों कि शक्ति को कुचल दिया

अरबोंअसफलता के कारण : —

(I) जुनैद के उत्तराधिकारी समीम के दुर्बल होने के कारण अरब भारत मे अपने साम्राज्य अक्षुण्ण नहीं रख सके।
(II) खलीफाओं पारस्परिक द्वेष के कारण अरब असफल रहे।
(III) अधिकांश खलीफा अयोग्य, अदूरदर्शी एवं ऐश्याशी
(IV) अरबों की असफलता के कारण भारतीय राजाओं कि अत्यधिक शक्तिशाली होना था
(V) युद्ध विद्या मे अरब निपुण नहीं थे तथा छलयुद्ध करते अर्थात दाहिर के विरोधी को अपना शरीयार बना कर दाहिर के विरुद्ध भड़काते थे जो उचित नहीं।
(VI) अरबों के भारत मे असफलता का कारण भारतीय विशेष सैनिक शक्ति तथा राज्य का संगठन था जो तत्कालीन अन्य राज्यो कि अपेक्षा उत्तम थी।

अरबों के आक्रमण का प्रभाव

(1) सामाजिक प्रभाव - सामाजिक व्यवस्था पर प्रभाव
(2) राजनीतिक प्रभाव - कोई राजनीतिक प्रभाव नहीं पड़ा,
(3) सांस्कृतिक प्रभाव - दशमलव प्रणाली का ज्ञान भारतीय अरबों से सीखा।